

नये शहरीकरण का चार्टर

न्यू अर्बनिज्म के लिए कांग्रेस केंद्रीय शहरों में विनिवेश, स्थानहीन फैलाव का प्रसार, नस्ल और आय के आधार पर बढ़ता अलगाव, पर्यावरणीय गिरावट, कृषि भूमि और जंगल की हानि, और समाज की निर्मित विरासत के क्षरण को एक परस्पर संबंधित समुदाय-निर्माण चुनौती के रूप में देखती हैं।

हम सुसंगत महानगरीय क्षेत्रों के भीतर मौजूदा शहरी केंद्रों और कस्बों की बहाली, वास्तविक पड़ोस और विविध जिलों के समुदायों में फैले उपनगरों के पुनर्निर्माण, प्राकृतिक वातावरण के संरक्षण, और हमारी निर्मित विरासत के संरक्षण के लिए खड़े हैं।

हम निम्नलिखित सिद्धांतों का समर्थन करने के लिए सार्वजनिक नीति और विकास प्रथाओं के पुनर्गठन की वकालत करते हैं। पड़ोस उपयोग और जनसंख्या में विविध होना चाहिए। समुदायों को पैदल चलने वालों और पारगमन के साथ-साथ कार के लिए भी डिज़ाइन किया जाना चाहिए। शहरों और कस्बों को भौतिक रूप से परिभाषित और सार्वभौमिक रूप से सुलभ सार्वजनिक स्थानों और सामुदायिक संस्थानों द्वारा आकार दिया जाना चाहिए। शहरी स्थानों को वास्तुकला और परिदृश्य डिज़ाइन द्वारा तैयार किया जाना चाहिए जो स्थानीय इतिहास, जलवायु, पारिस्थितिकी और भवन निर्माण अभ्यास का जश्न मनाते हों।

हम मानते हैं कि भौतिक समाधान अपने आप में सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान नहीं करेंगे, लेकिन न ही आर्थिक जीवन शक्ति, सामुदायिक स्थिरता और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को एक सुसंगत और सहायक भौतिक ढांचे के बिना कायम रखा जा सकता है।

हम एक व्यापक आधार वाले नागरिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के नेताओं, सामुदायिक कार्यकर्ताओं और बहु-विषयक पेशेवरों से बना है। हम नागरिक-आधारित भागीदारी योजना और डिज़ाइन के माध्यम से निर्माण की कला और समुदाय के निर्माण के बीच संबंध को फिर से स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

हम अपने घरों, ब्लॉकों, सड़कों, पार्कों, पड़ोसों, जिलों, कस्बों, शहरों, क्षेत्रों और पर्यावरण को पुनः प्राप्त करने के लिए खुद को समर्पित करते हैं।

हम सार्वजनिक नीति, विकास अभ्यास, शहरी नियोजन और डिज़ाइन को निर्देशित करने के लिए निम्नलिखित सिद्धांतों पर जोर देते हैं:

क्षेत्र: महानगर, शहर और कस्बे

- 1) महानगरीय क्षेत्र स्थलाकृति, जलक्षेत्र, समुद्र तट, खेत, क्षेत्रीय पार्क और नदी घाटियों से प्राप्त भौगोलिक सीमाओं वाले सीमित स्थान हैं। महानगर कई केंद्रों से बना है जो शहर, कस्बे और गांव हैं, प्रत्येक का अपना पहचान योग्य केंद्र और किनारा है।
- 2) महानगरीय क्षेत्र समकालीन विश्व की एक मौलिक आर्थिक इकाई है। सरकारी सहयोग, सार्वजनिक नीति, भौतिक योजना और आर्थिक रणनीतियों को इस नई वास्तविकता को प्रतिबिंबित करना चाहिए।
- 3) महानगर का अपने कृषि प्रधान इलाकों और प्राकृतिक परिदृश्यों से एक आवश्यक और नाजुक रिश्ता है। यह रिश्ता पर्यावरणीय, आर्थिक और सांस्कृतिक है। खेत और प्रकृति महानगर के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना कि घर के लिए बगीचा।
- 4) विकास के पैटर्न को महानगर के किनारों को धुंधला या मिटाना नहीं चाहिए। मौजूदा शहरी क्षेत्रों के भीतर इन्फिल विकास पर्यावरणीय संसाधनों, आर्थिक निवेश और सामाजिक ताने-बाने को संरक्षित करता है, जबकि सीमांत और परित्यक्त क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करता है। महानगरीय क्षेत्रों को परिधीय विस्तार पर इस तरह के इन्फिल विकास को प्रोत्साहित करने के लिए रणनीति विकसित करनी चाहिए।
- 5) जहां उपयुक्त हो, शहरी सीमाओं से सटे नए विकास को पड़ोस और जिलों के रूप में व्यवस्थित किया जाना चाहिए, और मौजूदा शहरी पैटर्न के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए। गैर-सन्निहित विकास को अपने स्वयं के शहरी किनारों के साथ कस्बों और गांवों के रूप में व्यवस्थित किया जाना चाहिए, और नौकरियों/आवास संतुलन के लिए योजना बनाई जानी चाहिए, न कि शयनकक्ष उपनगरों के रूप में।
- 6) कस्बों और शहरों के विकास और पुनर्विकास को ऐतिहासिक पैटर्न, मिसाल और सीमाओं का सम्मान किया जाना चाहिए।
- 7) शहरों और कस्बों को नजदीक लाना चाहिए, क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को समर्थन देने के लिए सार्वजनिक और निजी उपयोगों का एक व्यापक स्पेक्ट्रम जो सभी आय के लोगों को लाभान्वित करता है। नौकरी के अवसरों से मेल खाने और गरीबी की सघनता से बचने के लिए पूरे क्षेत्र में किफायती आवास वितरित किए जाने चाहिए।
- 8) क्षेत्र के भौतिक संगठन को परिवहन विकल्पों के ढांचे द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए। पारगमन, पैदल यात्री और साइकिल प्रणालियों को ऑटोमोबाइल पर निर्भरता कम करते हुए पूरे क्षेत्र में पहुंच और गतिशीलता को अधिकतम करना चाहिए।
- 9) कर आधार के लिए विनाशकारी प्रतिस्पर्धा से बचने और परिवहन, मनोरंजन, सार्वजनिक सेवाओं, आवास और सामुदायिक संस्थानों के तर्कसंगत समन्वय को बढ़ावा देने के लिए राजस्व और संसाधनों को क्षेत्रों के भीतर नगर पालिकाओं और केंद्रों के बीच अधिक सहयोगपूर्वक साझा किया जा सकता है।

पड़ोस, जिला और गलियारा

10) पड़ोस, जिला और गलियारा महानगर में विकास और पुनर्विकास के आवश्यक तत्व हैं। वे पहचान योग्य क्षेत्र बनाते हैं जो नागरिकों को उनके रखरखाव और विकास की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

11) पड़ोस सघन, पैदल यात्रियों के अनुकूल और मिश्रित उपयोग वाला होना चाहिए। जिले आम तौर पर एक विशेष एकल उपयोग पर जोर देते हैं, और जब संभव हो तो पड़ोस डिजाइन के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। गलियारे, पड़ोस और जिलों के क्षेत्रीय संयोजक हैं; इनमें बुलेवार्ड और रेल लाइनों से लेकर नदियाँ और पार्कवे तक शामिल हैं।

12) दैनिक जीवन की कई गतिविधियाँ पैदल दूरी के भीतर होनी चाहिए, जिससे उन लोगों को स्वतंत्रता मिल सके जो गाड़ी नहीं चलाते, विशेष रूप से बुजुर्गों और युवाओं को। सड़कों के परस्पर जुड़े नेटवर्क को पैदल चलने को प्रोत्साहित करने, ऑटोमोबाइल यात्राओं की संख्या और लंबाई को कम करने और ऊर्जा बचाने के लिए डिजाइन किया जाना चाहिए।

13) पड़ोस के भीतर, आवास प्रकार और मूल्य स्तरों की एक विस्तृत श्रृंखला विभिन्न आयु, नस्ल और आय के लोगों को दैनिक बातचीत में ला सकती है, जिससे एक प्रामाणिक समुदाय के लिए आवश्यक व्यक्तिगत और नागरिक बंधन मजबूत हो सकते हैं।

14) पारगमन गलियारे, जब ठीक से योजनाबद्ध और समन्वित होते हैं, तो महानगरीय संरचना को व्यवस्थित करने और शहरी केंद्रों को पुनर्जीवित करने में मदद मिल सकती है। इसके विपरीत, राजमार्ग गलियारों को मौजूदा केंद्रों से निवेश विस्थापित नहीं करना चाहिए।

15) उपयुक्त भवन घनत्व और भूमि उपयोग पारगमन स्टॉप से पैदल दूरी के भीतर होना चाहिए, जिससे सार्वजनिक परिवहन ऑटोमोबाइल का एक व्यवहार्य विकल्प बन सके।

16) नागरिक, संस्थागत और वाणिज्यिक गतिविधियों का संकेन्द्रण पड़ोस और जिलों में किया जाना चाहिए, न कि दूरस्थ, एकल-उपयोग परिसरों में अलग-थलग किया जाना चाहिए। स्कूलों का आकार और स्थान इस प्रकार होना चाहिए कि बच्चे पैदल या साइकिल से उनमें आ सकें।

17) ग्राफिक शहरी डिजाइन कोड के माध्यम से पड़ोस, जिलों और गलियारों के आर्थिक स्वास्थ्य और सामंजस्यपूर्ण विकास में सुधार किया जा सकता है जो परिवर्तन के लिए पूर्वानुमानित मार्गदर्शक के रूप में काम करते हैं।

18) पार्कों की एक श्रृंखला, टोट-लॉट्स और गांव के हरे-भरे मैदानों से लेकर बॉलफील्ड्स और सामुदायिक उद्यानों तक, पड़ोस के भीतर वितरित की जानी चाहिए। संरक्षण क्षेत्रों और खुली भूमि का उपयोग विभिन्न पड़ोस और जिलों को परिभाषित करने और जोड़ने के लिए किया जाना चाहिए।

ब्लॉक, सड़क और इमारत

- 19) सभी शहरी वास्तुकला और परिदृश्य डिजाइन का प्राथमिक कार्य साझा उपयोग के स्थानों के रूप में सड़कों और सार्वजनिक स्थानों की भौतिक परिभाषा है।
- 20) व्यक्तिगत वास्तुशिल्प परियोजनाओं को उनके परिवेश से निर्बाध रूप से जोड़ा जाना चाहिए। यह मुद्दा शैली से परे है।
- 21) शहरी स्थानों का पुनरुद्धार सुरक्षा और संरक्षा पर निर्भर करता है। सड़कों और इमारतों के डिजाइन को सुरक्षित वातावरण को सुदृढ़ करना चाहिए, लेकिन पहुंच और खुलेपन की कीमत पर नहीं।
- 22) समकालीन महानगर में, विकास को ऑटोमोबाइल को पर्याप्त रूप से समायोजित करना चाहिए। इसे ऐसे तरीकों से करना चाहिए जिससे पैदल चलने वालों और सार्वजनिक स्थान के स्वरूप का सम्मान किया जा सके।
- 23) सड़कें और चौराहे पैदल चलने वालों के लिए सुरक्षित, आरामदायक और दिलचस्प होने चाहिए। उचित रूप से कॉन्फ़िगर किए गए, वे चलने को प्रोत्साहित करते हैं और पड़ोसियों को एक-दूसरे को जानने और अपने समुदायों की रक्षा करने में सक्षम बनाते हैं।
- 24) वास्तुकला और परिदृश्य डिजाइन को स्थानीय जलवायु, स्थलाकृति, इतिहास और भवन अभ्यास से विकसित होना चाहिए।
- 25) सामुदायिक पहचान और लोकतंत्र की संस्कृति को सुदृढ़ करने के लिए नागरिक भवनों और सार्वजनिक सभा स्थलों को महत्वपूर्ण स्थलों की आवश्यकता होती है। वे विशिष्ट रूप के पात्र हैं, क्योंकि उनकी भूमिका अन्य इमारतों और स्थानों से भिन्न है जो शहर का निर्माण करते हैं।
- 26) सभी इमारतों को अपने निवासियों को स्थान, मौसम और समय की स्पष्ट जानकारी देनी चाहिए। हीटिंग और कूलिंग के प्राकृतिक तरीके यांत्रिक प्रणालियों की तुलना में अधिक संसाधन-कुशल हो सकते हैं।
- 27) ऐतिहासिक इमारतों, जिलों और परिदृश्यों का संरक्षण और नवीनीकरण शहरी समाज की निरंतरता और विकास की पुष्टि करता है।